सूरह — एक कहानी

सूरह अल-मुनाफ़िक़ून

मुनाफ़िक़

पूरा सफ़र — चमकती खाल और खोखला अंदर —

जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 63 • 11 आयतें • मदनी

नूरानी इल्म

nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इज़ा जा-अकल्-मुनाफ़िक़ून क़ालू नश्-हदु इन्नक ल-रसूलुल्-लाह

1. जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं तो कहते हैं: हम गवाही देते हैं कि बेशक आप अल्लाह के रसूल हैं।

क-अन्नहुम ख़ुशुबुम्-मुसन्नदह

4. गोया वो दीवार से टिकाई हुई लकड़ियाँ हों।

व लिल्लाहिल्-'इज़्ज़तु व लि-रसूलिही व लिल्-मु'मिनीन

8. और इज़्ज़त अल्लाह के लिए है, और उसके रसूल के लिए, और मोमिनीन के लिए।

ला तुल्हिकुम अम्वालुकुम व ला औलादुकुम 'अन ज़िक्रिल्-लाह

9. तुम्हारा माल और तुम्हारी औलाद तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दे।

रब्बि लौला अख़्ख़र्तनी इला अजलिन क़रीब

10. ऐ मेरे रब, काश तू मुझे थोड़ी सी मोहलत और दे देता।

व लंय्-यु'अख़्ख़िरल्-लाहु नफ़्सन इज़ा जा-अ अजलुहा

11. और अल्लाह किसी जान को हरगिज़ मोहलत नहीं देता जब उसका वक़्त आ जाए।

एक सच्चा जुमला एक झूटे दिल से

बेटा, क़ुरआन जितनी बीमारियों का इलाज करता है उन सब में से ये सूरह सबसे ख़तरनाक को उठाती है — **निफ़ाक़**, मुनाफ़िक़त। खुले कुफ़्र से ज़्यादा ख़तरनाक, क्योंकि खुला दुश्मन कम अज़ कम नज़र तो आता है; ये तो आपकी सफ़ में नमाज़ पढ़ता है और आपके घर में चाय पीता है।

और सुनिए सूरह कैसे शुरू होती है, क्योंकि ये एक हैरत-अंगेज़ बात सिखाती है: 'जब मुनाफ़िक़ आपके पास आते हैं, तो कहते हैं: हम गवाही देते हैं कि बेशक आप **अल्लाह के रसूल** हैं।' अब बेटा — क्या ये जुमला सच्चा है? बिल्कुल सच्चा। ये हमारे कलिमे का दूसरा हिस्सा है। और फिर भी अल्लाह का फ़ैसला ठीक इसी आयत में गिरता है: 'और अल्लाह **जानते** हैं कि आप उसके रसूल हैं — और अल्लाह **गवाही** देते हैं कि मुनाफ़िक़ यक़ीनन **झूटे** हैं।'

तो फिर झूट कहाँ है? अल्फ़ाज़ में नहीं — उनके पीछे वाले **दिल** में। अल्लाह ने उन्हें मुहम्मद ﷺ के बारे में झूटा नहीं कहा; उन्होंने उन्हें **ख़ुद अपने** बारे में झूटा कहा: उन्होंने कहा 'हम गवाही देते हैं' जब कि उनके सीनों ने कोई गवाही दी ही नहीं। बेटा, पहली आयत से ये सूरह अपना मेयार तय कर देती है: **किसी बात की सचाई अल्लाह के सामने उस दिल में बसती है जो उसे कहता है, उसकी ग्रामर में नहीं।** और इसी लिए अगली लाइन कहती है: 'उन्होंने अपनी क़समों को **ढाल** बना लिया' — अल्लाह के मुक़द्दस नाम को सवालों से बचने की आड़ बनाते हुए।

और एक होला देने वाली वज़ाहत आती है: 'ये इस लिए कि वो ईमान लाए, फिर कुफ़्र किया — तो उनके दिलों पर **मुहर** लगा दी गई।' बेटा, दिल का दरवाज़ा सँभालिए, क्योंकि **जो दरवाज़े बार बार बातिल के लिए खोले जाते हैं वो एक दिन बंद करके मुहर लगाए जा सकते हैं।**

दीवार से टिकाई हुई लकड़ियाँ

फिर वो तस्वीर आती है जो इतनी सटीक है कि एक बार देख लेने के बाद आप इसे अपनी बाक़ी ज़िंदगी पहचानते रहेंगे: 'और जब आप उन्हें **देखते** हैं, उनके जिस्म आपको भाते हैं; और जब वो **बोलते** हैं, आप उनकी बात **सुनते** हैं — **क-अन्नहुम ख़ुशुबुम्-मुसन्नदह** — गोया वो **दीवार से टिकाई हुई लकड़ियाँ** हों।'

इसका तसव्वुर कीजिए, बेटा। दूर से, एक लंबी लकड़ी दीवार से टिकी हुई एक खड़े आदमी जैसी लग सकती है — एक शानदार, सीधी सूरत। मगर क़रीब आइए। वो सिर्फ़ इसलिए खड़ी है कि कोई **और** उसे टिकाए हुए है। उसकी ज़मीन में कोई जड़ें नहीं। वो कुछ सुनती नहीं। वो कुछ उगाती नहीं। वो न साया देती है न फल। **ये एक दरख़्त की शक्ल है, एक दरख़्त की जान के बग़ैर।** और जब दीवार हटा दी जाए, वो धड़ाम से गिर पड़ती है।

मदीना में उनका सरदार, अब्दुल्लाह इब्ने उबय्य, ठीक यही था: लंबा, ख़ूबसूरत, फ़सीह — लोग झुक कर सुनते जब वो बोलता। क़ुरआन कहता है उनके जिस्म भाते हैं और उनकी बात खींचती है, और फिर वो आपको उस चमक के पीछे ले जा कर **खोखला-

पन** दिखाता है।

और वो झूटे अंदर की निशानी-दार अलामत बताता है: 'वो **हर चिंघाड़** को अपने ख़िलाफ़ समझते हैं।' मुसलसल शक, दाइमी बे-चैनी — क्योंकि जो आदमी कुछ छुपा रहा हो वो किसी कमरे में कभी आराम से नहीं बैठ सकता। बेटा, **मुख़्लिस आदमी की सबसे बड़ी राहत ये है कि उसके पास छुपाने को कुछ नहीं; मुनाफ़िक़ का सबसे बड़ा अज़ाब ये है कि उसके पास छुपाने को सब कुछ है।**

फिर फ़ैसला: '**हुमुल्-'अदुव्वु फ़ह्ज़र्हुम** — **यही** दुश्मन हैं, तो उन से होशियार रहो।' और जब उन्हें बुलाया गया कि आएँ ताकि अल्लाह के रसूल ﷺ **उनके** लिए मग़फ़िरत माँगें, 'वो अपने सर फेर लेते हैं, और आप उन्हें तकब्बुर से कतराते हुए देखते हैं।' मग़फ़िरत का दरवाज़ा खुला — और ग़ुरूर ने उसे पटख़ कर बंद कर दिया। यही, बेटा, निफ़ाक़ का पूरा त्रासदी है: **ये नहीं कि माफ़ी ना-दस्तयाब थी, बल्कि ये कि गर्दन इतनी अकड़ी हुई थी कि उसके लिए झुक न सकी।**

इज़्ज़त का सिर्फ़ एक पता है

अब वो वाक़िआ, बेटा, जिसने इस सूरह को उसकी आख़िरी शक्ल दी — बनू मुस्तलिक़ के ग़ज़वे का एक मंज़र।

एक पानी के घाट पर मुहाजिरीन के एक आदमी और अंसार के एक आदमी के दरमियान झगड़ा हो गया, और हर एक ने अपने अपने ग्रुप को पुकारा। नबी ﷺ तशरीफ़ लाए और फ़ौरन इसे ठंडा कर दिया: 'इसे छोड़ो — ये सड़ी हुई (जाहिलियत की) बात है।' मगर अब्दुल्लाह इब्ने उबय्य ने ये सुना और अपने गिर्द वालों के कान में ज़हर भरा एक जुमला फूँका: 'उन्होंने ये कर दिखाया! रुको जब तक हम मदीना लौट आएँ — **ल-युख़्रिजन्नल्-अ'अज़्ज़ु मिन्हल्-अज़ल्ल** — **ज़्यादा इज़्ज़तदार** उस **ज़लील** को उसमें से ज़रूर निकाल देगा।' उसका मतलब था ख़ुद को इज़्ज़तदार, और अल्लाह के रसूल ﷺ को कमज़ोर।

एक नौजवान सहाबी, ज़ैद इब्ने अरक़म (रज़ि0), ने ये सुना और रिपोर्ट किया। इब्ने उबय्य ने क़सम खाई कि उसने कुछ नहीं कहा; लोगों ने लड़के पर सरदार का यक़ीन

किया, और ज़ैद अपने सीने में ग़म लिए बैठे रहे — यहाँ तक कि ये सूरह नाज़िल हुई और ख़ुद अल्लाह ने उनके हक़ में गवाही दी। नबी ﷺ ने ज़ैद का कान पकड़ा और फ़रमाया: तुम्हारे कान ने सच सुना, और तुम्हारे रब ने तेरी तस्दीक़ की।

और क़ुरआन ने लुग़त हमेशा के लिए दोबारा लिख दी: '**व लिल्लाहिल्-'इज़्ज़तु व लि-रसूलिही व लिल्-मु'मिनीन** — और सारी **इज़्ज़त** अल्लाह के लिए है, और उसके रसूल के लिए, और **मोमिनीन** के लिए — मगर मुनाफ़िक़ नहीं जानते।' बेटा, **इज़्ज़त दौलत, क़बीले, फ़ॉलोअर्स या लक़बों से नहीं बनती; ये सिर्फ़ एक दफ़्तर से जारी होती है**, और वो जिसे चाहे देता है।

और फिर इस कहानी का सीरत का सबसे हैरत-अंगेज़ मंज़र। अब्दुल्लाह इब्ने उबय्य का अपना **बेटा** — जिसका नाम भी अब्दुल्लाह था, एक मुख़्लिस मोमिन — आया और मदीना के दरवाज़े पर अपने बाप के सामने तलवार निकाल कर खड़ा हो गया, और कहा: अल्लाह की क़सम, आप अंदर नहीं आएँगे जब तक ये न मान लें कि **आप** ज़लील हैं और अल्लाह के रसूल ﷺ इज़्ज़तदार। बाप से ये कहलवाया गया। ईमान ने, बेटा, उसकी वफ़ादारियाँ ख़ून से भी ज़्यादा सच कर दी थीं — और फिर भी ग़ौर कीजिए: **उसने अपने बाप से एक लफ़्ज़ माँगा, उसकी जान नहीं।**

और जब कुछ लोगों ने सरदार-ए-मुनाफ़िक़ को क़त्ल करने की राय दी, नबी ﷺ ने एक ऐसी हिकमत से इनकार कर दिया जो सियासत से कहीं बुलंद है: 'नहीं — कहीं लोग ये न कहें कि मुहम्मद अपने साथियों को क़त्ल करता है।' **दीन की साख़ एक दुश्मन के ख़त्म करने से ज़्यादा भारी थी।** निफ़ाक़ के साथ मज़बूती, बेटा; लोगों के साथ हैरत-अंगेज़ नरमी — दोनों एक साथ, हमेशा।

दो बेहोशी की दवाएँ

और अब सूरह **उन** से हट कर **हम** की तरफ़ मुड़ती है — क्योंकि हर बीमारी जो उसने बयान की वो छोटी आदतों से शुरू होती है। '**या अय्युहल्-लज़ीन आमनू! ला तुल्हिकुम अम्वालुकुम व ला औलादुकुम 'अन ज़िक्रिल्लाह** — ऐ ईमान वालो! तुम्हारा **माल** और तुम्हारी **औलाद** तुम्हें अल्लाह की **याद** से ग़ाफ़िल न

कर दे। व मंय्-यफ़्अ'ल ज़ालिक फ़-उलाइक हुमुल्-ख़ासिरून — और जो ऐसा करे — **वही घाटे** में हैं।'

बेटा, ग़ौर कीजिए अल्लाह ने दो बड़ी बेहोशी की दवाएँ कौन सी चुनीं: गुनाह नहीं, जुर्म नहीं — **माल** और **औलाद**। इंसान की ज़िंदगी की दो सबसे महबूब, सबसे हलाल, सबसे बा-इज़्ज़त चीज़ें। क्योंकि शाज़ ही कोई ज़ाहिरी बुरी चीज़ मोमिन का दिल चुराती है; **ये वो अच्छी चीज़ होती है जो हद से ज़्यादा मोहब्बत की जाए।** वो ओवरटाइम जो फ़ज्र खा जाए। बच्चे का शेड्यूल जो ख़ामोशी से दिन में से क़ुरआन मिटा दे। कोई गुनाह नहीं करता, और फिर भी कोई अल्लाह को याद नहीं करता।

और वो नतीजे को उसके सही नाम से पुकारते हैं — 'मसरूफ़' नहीं, 'बद-क़िस्मत' नहीं — **ख़ासिरून, घाटे वाले**: वो जिन्होंने सोना शीशे के बदले दिया और उसे एक अच्छा साल कहा।

देर मना होने से पहले दे दो

और फिर, बेटा, सूरह पूरे क़ुरआन में सदक़े के बारे में सबसे संजीदा आयत पर ख़त्म होती है — इसे आहिस्ता पढ़िए, क्योंकि ये एक ऐसी आवाज़ की रिकॉर्ड है जो आप और मैं एक दिन ज़रूर सुनेंगे:

'और उस में से **ख़र्च** करो जो हमने तुम्हें दिया, उस से **पहले** कि तुम में से किसी को मौत आ जाए और वो कहे: **रब्बि लौला अख़्ख़र्तनी इला अजलिन क़रीब** — ऐ मेरे रब, **काश** तू मुझे **थोड़ी सी मोहलत** और दे देता — **फ़-अस्सद्दक़ व अकुम्-मिनस्-सालिहीन** — ताकि मैं **सदक़ा** दूँ और नेकों में से हो जाऊँ!'

बेटा, उस आख़िरी दरख़्वास्त पर ग़ौर कीजिए। मरते हुए इंसान की आरज़ू क्या है? और साल नहीं — 'अजलिन क़रीब', एक थोड़ी सी मुद्दत। और उस मुद्दत का करना क्या है? कोई और घर नहीं, कोई और सफ़र नहीं, कोई आख़िरी छुट्टी नहीं। **सदक़ा।** वो देना जो वो कभी दे न सका।

और उलमा ने इस पर बात की है: **हर वो शख़्स जो कोताही में मरा, यही माँगेगा —**

मगर उसने नाम ख़ास तौर पर सदक़े का लिया।** क्योंकि वो हर उस चीज़ में सबसे आसान था जिसे उसने टाल दिया, और उसकी क़ीमत सबसे कम थी, और उसका अज्र सबसे ज़्यादा दाइमी।

और फिर वो दरवाज़ा बंद हो जाता है: '**व लंय्-यु'अख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन इज़ा जा-अ अजलुहा** — और अल्लाह किसी जान को **हरगिज़** मोहलत नहीं देगा जब उसका वक़्त आ जाए। **वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा त'अ्मलून** — और अल्लाह उससे ख़ूब बा-ख़बर है जो तुम करते हो।'

बेटा, तो इस सूरह का पूरा सफ़र देखिए: ये एक ऐसे आदमी से शुरू हुई जो सच बोलता है मगर उसका दिल ख़ाली है, और वो एक ऐसे आदमी पर ख़त्म होती है जिसका दिल आख़िर-कार जाग गया मगर उसका वक़्त ख़त्म हो चुका। **इन दोनों के दरमियान वो जगह है जहाँ आप अभी खड़े हैं।**

तो आज ही कुछ दे दीजिए — छोटा ही सही। **वो दुआ आज कर लीजिए जो आप उस दिन करेंगे।**

इस सूरह से क्या सीखा

1. किसी बात की सचाई उस दिल में बसती है जो उसे कहता है — मुनाफ़िक़ ने सच जुमला कहा और झूटा क़रार पाया।

2. अल्लाह के नाम को कभी ढाल मत बनाइए — क़समें सवालों से बचने की आड़ नहीं।

3. 'दीवार से टिकाई हुई लकड़ियाँ' — शक्ल शानदार, जड़ें कोई नहीं; अपनी जड़ों की फ़िक्र कीजिए, अपनी सूरत की नहीं।

4. निफ़ाक़ की त्रासदी ये नहीं कि माफ़ी ना-दस्तयाब थी — बल्कि ये कि गर्दन झुक न सकी।

5. इज़्ज़त सिर्फ़ एक दफ़्तर से जारी होती है: अल्लाह, उसके रसूल ﷺ, और मोमिनीन के लिए।

6. दो हलाल बेहोशी की दवाओं से होशियार रहिए — माल और औलाद; बुरी चीज़ें कम, हद से बढ़ी हुई अच्छी चीज़ें ज़्यादा दिल चुराती हैं।

7. वो दुआ आज कर लीजिए जो आप मौत के वक़्त करेंगे: कुछ दे दीजिए, अभी — क्योंकि उस दिन कोई मोहलत नहीं।

या अल्लाह, हमें निफ़ाक़ से बचाइए, हमारी ज़ुबान को हमारे दिल का सच्चा बना दीजिए, और हमें मोहलत ख़त्म होने से पहले देने वालों में शामिल फ़रमाइए। आमीन।